ISBN: 978-93-86906-68-7
IMPRINT: BAHUVACHAN

HERITAGE & CULTURE
₹795 HB

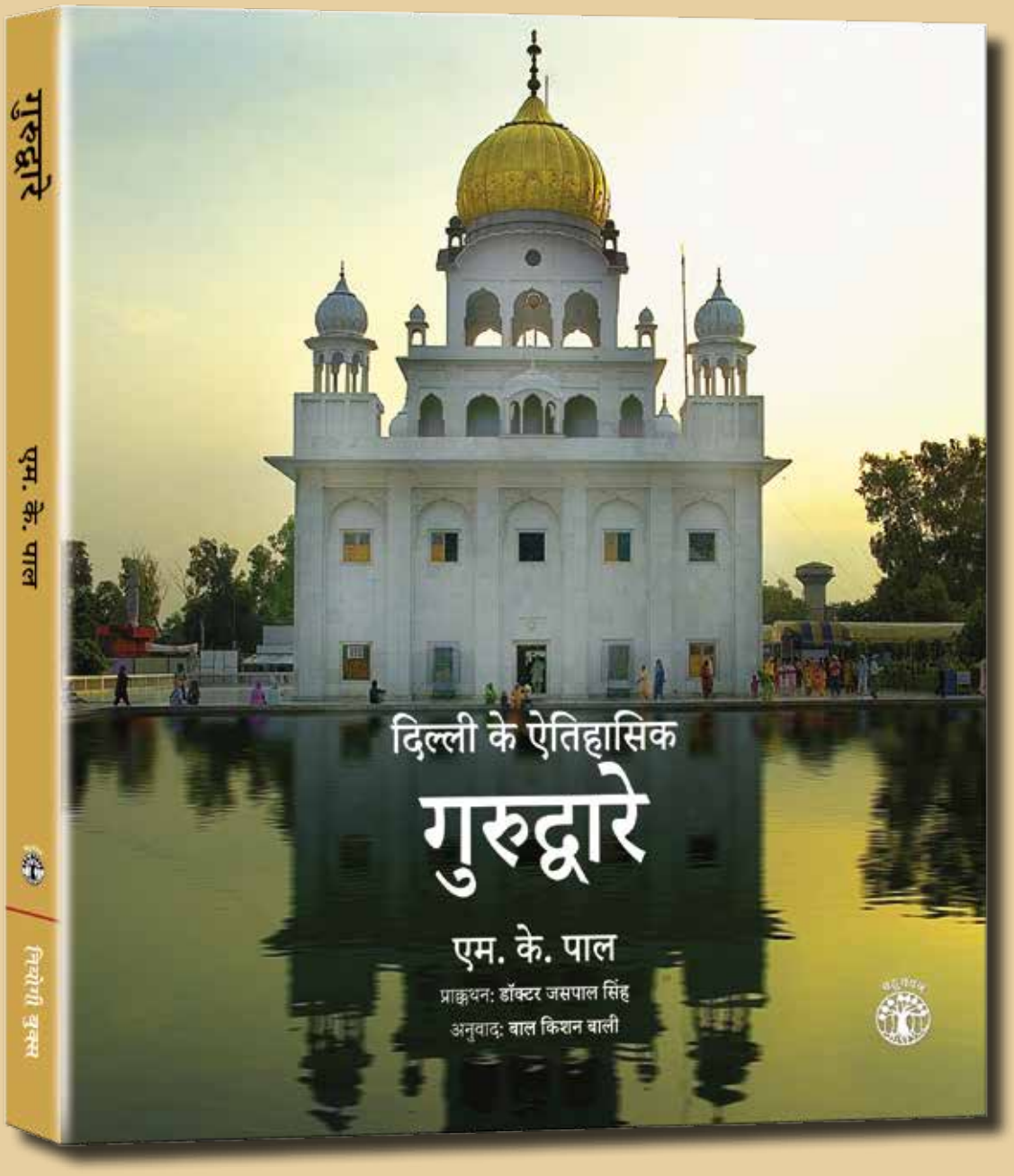

Published by
NIYOGI BOOKS
Fine publishing within reach

NIYOGI BOOKS PRIVATE LIMITED
Block D, Building No. 77, Okhla Industrial Area, Phase-1, New Delhi-110020, INDIA
Phone: 011 26816301, 26818960, Email: niyogibooks@gmail.com, Website: www.niyogibooksindia.com

दिल्ली के ऐतिहासिक
गुरुद्वारे

एम. के. पाल
अनुवाद: **बाल किशन बाली**

HERITAGE & CULTURE
₹795
ISBN: 978-93-86906-68-7
Size: 190mm x 176mm; 184pp
130 gsm art paper (matt)
All colour; 85 photographs
Hardback with dust jacket

एक प्रसिद्ध इतिहासकार और कला, शिल्प एवं सामाजिक-सांस्कृतिक अध्ययन के विशिष्ट विद्वान एम.के. पाल द्वारा लिखित 'दिल्ली के ऐतिहासिक गुरुद्वारे', एक गहन अनुसंधान और अध्ययन का परिणाम है, जो इन धार्मिक स्थलों के महत्व और उनकी ऐतिहासिक और सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को उजागर करती है। सिख इतिहास के अनुसार कई गुरुओं के चरण पड़ने से पवित्र हुए गुरुद्वारे दिल्ली शहर के विभिन्न हिस्सों में स्थित हैं।

यह पुस्तक एक महान सिख धर्म के अनुयायियों के लिए इन तीर्थों के महत्व को सही ढंग से समझने के लिए आवश्यक प्रासंगिक जानकारी एकत्र करने का प्रयास करती है। इस पुस्तक से कई दंतकथाओं और गुरुद्वारे के निर्माण से जुड़ी कहानियों का पता चलता है, जो गुरुओं द्वारा अपने धर्म और आस्था के लिए किए गए संघर्ष और कठिनाइयों के अनुस्मारक के रूप में मौजूद हैं। ये आज भी सिख समुदाय के हृदय और मानस में सिख धर्म की आत्मा को जीवन्त रखने में सहायक है।

दिल्ली के गुरुद्वारे की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि।

प्रत्येक गुरुद्वारे से जुड़ी रोचक दंतकथाएँ।

सिख गुरुओं द्वारा अपने धर्म एवं आस्था के लिए किए गए संघर्ष की दास्तान।

स्व. एम. के. पाल चार दशक से भी अधिक समय से कला-शिल्प और सामाजिक-सांस्कृतिक शोध में संलग्न रहे। उन्होंने एक संग्रहालय विशेषज्ञ के रूप में राष्ट्रीय हस्तशिल्प और हथकरघा संग्रहालय, नई दिल्ली में अपने कार्यकाल के दौरान कई परियोजनाओं पर कार्य किया और उन्होंने इंगलैंड और अमेरिका में 1982 और 1985 में आयोजित भारतीय प्रदर्शनियों में भाग लिया था। नेशनल म्यूज़ियम ऑफ़ एथनोलॉजी, ओसाका, जापान (1980-1995) में एक सलाहकार के रूप में उन्होंने सैकड़ों भारतीय कलाकृतियों को एकत्रित किया, जो अब उस संग्रहालय के भारतीय खंड में रखी गई हैं। उन्होंने पुराने लकड़ी के रथ (मंदिर कार) को भी डिज़ाइन किया और उसकी 35-फ़ीट की प्रतिकृति बनाई जो अब चेन्नई के पार्थसारथी मंदिर में संरक्षित है। भारतीय कला, संस्कृति और शिल्प विरासत पर सचित्र पुस्तकों, मोनोग्राफ़, पत्रों और लेखों के एक लेखक के रूप में एम.के. पाल को पुरातात्विक और साहित्यिक स्रोतों के साथ-साथ अन्वेषण और संग्रहालय में किए गए संग्रहों से प्राप्त बुनियादी आँकड़ों का गहराई से विश्लेषण करने का श्रेय दिया जाता है। यह पुस्तक उनके श्रमसाध्य अनुसंधान और विस्तृत अन्वेषण का परिणाम है।

बाल किशन बाली (एम. ए. राजनीति विज्ञान, डिप्लोमा हिन्दी पत्रकारिता) लेखक, अनुवादक, गीतकार, व स्वतंत्र पत्रकार, हैं। इनकी लिखी और अनुवादित की गई डाक्युमेन्ट्रीज दूरदर्शन, टॉपर, राज्यसभा टीवी और नेशनल ज्योग्राफिक चैनल पर प्रसारित हुई हैं। इसके अलावा ये क्षेत्रीय फिल्में और एल्बम बनाने में सक्रिय हैं।